

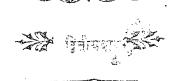




जिस**क**ो

सुंशीनवलिक्शोर (की किंको क शहरा लुख्या केंग्री किंको कि

उसीको इसवार उकार प्रवेशनावित अपने नेवाति पण्डित रामविहारी शुक्तकात संस्कृत प्राप्ति पुलस्केटिक स्वाप्ति





, मुंश्रीनृवलाकिशोर (सी, है उद्देश के खुलेखाने में इला कर् १३०४ ई०